International Journal of Enhanced Research in Educational Development,
IJERED, ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 1, Jan.-Feb, 2025

हिंदी काव्य में राष्ट्रीय प्रेम की अभिव्यक्ति

शोभा मेघवाल

सारांश

साहित्य समाज का दर्पण है, इस कथन से सभी अवगत हैं, इसके मूल में जो तथ्य समाहित है वह अपने आप में विविध भावों से पूरित है। साहित्य समाज के जीवन का यथार्थ दर्पण है, क्योंकि वह मानव मन की इच्छाओं, आकांक्षाओं और मनोवृत्ति को लिपिबद्ध करता है। समाज में होने वाली सभी स्थितियाँ परिस्थितियाँ तथा वातावरण से एक बुद्धिजीवी वर्ग को अवगत करवाकर अपेक्षित सुधारात्मक दृष्टिकोण की परंपरा का निर्वहन करवाने का कार्य निष्पादित करता है। राष्ट्र का निर्माण करने में हिंदी काव्य ने सहयोगी और प्रेरक बन कर राष्ट्र को नई चेतना प्रदान की हैं।

कुंजी शब्द – साहित्य राष्ट्रीयता समाज हिंदी काव्य

प्रस्तावना

इसमें कोई संदेह नहीं है कि, हिंदी काव्य अपने जन्म काल से ही देश एवं समाज के उत्थान, संघर्ष और संकटों में सदा उनका सहयोगी और प्रेरक बनकर राष्ट्र को नई चेतना प्रदान की है। आदि काल में महाकवि चंदबरदाई जैसे कवि ने देश को आक्रांता से बचाने के लिए कलम के साथ तलवार भी हाथ में लेकर पृथ्वीराज चौहान जैसे राष्ट्रीय वीर के साथ आम जनमानस को भी देश की आन बान शान की रक्षा के लिए तैयार करने की कवायद की। भक्ति काल में सुर–तुलसी हुए तो रीतिकाल में भूषण ने शिवाजी और छत्रसाल को आलंबन बनाकर राष्ट्रीयता का जयघोष किया, तो दूसरी और आधुनिक काल के भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीयता का जयघोष किया, और आधुनिक काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीयता का बिगुल बजा दिया। राष्ट्रीय और उन को प्रेरित करने वाली शक्ति हीं राष्ट्रीयता होती है। यह एक तथ्य है कि, भूमि पर निवास करने वाले आम जन तथा आम जनों, आम लोगों की संस्कृति विचार से ही मिलकर एक स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करते हैं। अर्थात् भौगोलिक राजनीतिक सामाजिक और सांस्कृतिक एकता ही राष्ट्र का निर्माण करती है।

हिंदी साहित्य और इतिहास

प्रत्येक युग में राष्ट्र की प्रमुख चिंतन धारा एवं साँस्कृतिक चेतना को हिंदी काव्य ने आत्मसात् किया है। युगानुरूप उसका स्वरूप और भावनाएं बदली और आगे जाने वाले युग की पूर्व पीठीका बनी। विदेशी लोगों का भारत आना उनसे व्यापारिक संबंध स्थापित करने के प्रति फलस्वरूप लोगों की सोच बदली। अंग्रेजी शिक्षा के कारण सोचने विचारने का अवसर मिला। विदेशी शासन के शोषण और अनीति से आम जनता में जो क्षोभ उत्पन्न हुआ, उसके फल स्वरुप 1857 ईसवी में प्रथम स्वाधीनता रुपी चिंगारी विस्फोटक के रूप में फूट निकली। दिन–प्रतिदिन राष्ट्रीयता की अखंड ज्योति जलाने में अग्रसर रही। 1857 ई. से 15 अगस्त 1947 तक भारत का इतिहास राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहासहै, इससे साहित्याकार प्रभावित हुए। उन्होनें भी ऐसे काव्य की रचना की जो आम जन की भावना को देश केप्रति, राष्ट्र के प्रति देशभक्ति के भाव पैदा कर सके। उन्होंने समय की नब्ज को पहचाना अपने–अपने खोल छोड़ कर उन्होंने बाहरी दुनिया की ओर निहारा और पाया के विश्व के देश स्वाधिनता हवा में कहां से कहां पहुंच गए और हम हैं कि अभी तक मध्यकालीन गुलामी की जंजीरों में जकड़े हुए हैं। उन जंजीरों में से एक सशक्त जंजीर पराधीनता की है। दूसरी जंजीरे धर्म, जाति, भाषा, संस्कृति, राजनीति की हैं। आज धर्म के आधार पर लोगों के मध्य दीवार खड़ी की जाती है, तो दूसरी और राजनीति के नाम पर आम लोगों के साथ

षड्यंत्र किया जाता है। इस प्रकार की विकृत स्थिति को देखते हुए एक सफल साहित्यकार के हृदय में उहापोह की स्थिति उत्पन्न होती है, और वह अपनी सुजनशीलता का सदुपयोग राष्ट्र के लोगों की चेतना को जगाने के लिए करता हैं।

'जहाँ न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि'

सच्चा साहित्य वही है, जो राष्ट्र के देश काल और वातावरण के अनुकूल नेतृत्व प्रदान करने के लिए सूचित किया जाए। जब कभी राष्ट्र पर संकट के बादल मंडराये, हिंदी के साहित्यकारों ने सही दिशा प्रदान की है। साहित्य मानव मूल्यों संस्कारों परंपराओं को सुरक्षित करने के साथ–साथ सभी भाषाओं को कवियों ने राष्ट्रीयता को मजबूत करने के लिए अपनी अभिव्यक्ति को भारत माता की सेवा में तन–मन–धन से समर्पित कर दिया, इस संदर्भ में भारतेंदु हरिश्चंद्र का अपूर्व योगदान है।

हिंदी साहित्य और आधुनिक युग

भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी साहित्य में आधुनिक युग के प्रवर्तक माने जाते हैं, उन्होंने संपूर्ण राष्ट्र की पीड़ा को सच्चे अर्थों में समझ कर एक नई वाणी प्रदान की है।

'अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पर धन विदेश जात इहै अति ख्वारी'

दूसरी और बंकिम चंद्र चटर्जी ने अपने श्आनंद मठश में वंदे मातरम का गीत गाया तो महाकवि रवींद्रनाथ टैगोर ने 'जन गण मन अधिनायक' की जय–जयकार की। उर्दू के प्रसिद्ध कवि इकबाल ने 'सारे जहां से अच्छा हिंदुस्ता हमारा' गीत गाकर लोगों के हृदय में राष्ट्रीयता देश के प्रति समर्पण का भाव जागृत किया तो दूसरी और हिंदी के श्यामलाल पार्षद ने 'झंडा ऊंचा रहे हमारा' का संर ऊंचा उठाकर जनमानस को भारत के अद्भुत सौंदर्य का बखान करके देश भक्ति का भाव जगाया। हिंदी कवियों ने भी भारत माता के प्रति भाव प्रतिष्ठित किया।

'निलाम्बर परिधान हरित पट पर सुंदर है।
सूर्य चंद्र योग मुकुट मेखला रत्नाकर है।'

राष्ट्रीय कवि मैथिली शरण गुप्त की श्भारत–भारती नौजवानों में देश के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित किया है। राष्ट्रीयता की भावना के साथ साथ देश के प्रति अपने आप को उस पर करने की प्रबल भावना माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में दिखाई देती है पुष्प की अभिलाषा कविता राष्ट्रीय भावना देशभक्ति की अमर रचना है, जिसमें युवा अनुरूप देशभक्तों के लिए प्रेरणादायक बनी रहेगी।

'चाह नहीं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक ।।

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता में देशभक्तों का गुणानुवाद जो लोगों के कंठो का हार बनी हुई है –

'बुन्देले हरबोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी।'

आज समाज को ऐसी वाणी की आवश्यकता है जो समाज राष्ट्र में आमूलचूल परिवर्तन करने की क्षमता रखती हो पंडित बालकृष्ण शर्मा नवीन की पंक्तियां दृष्टव्य है–

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल पुथल मच जाए।
एक हिलोर इधर से आए, एक हीलोर उधर से आए,
सावधान मेरी वाणी में चिंगारियां बैठी है।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता समसामयिक विसंगतियों को हराने के लिए एक आम लोगों को जागृत करने की बात करते हैं कि, 'जागो फिर एक बार'। हिंदी के कवियों में रामधारी सिंह दिनकर जिसने अपनी कविता में राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना को प्रखरता से अभिव्यक्त किया है। उनका कहना कि स्वतंत्र भारत की जनता की हर क्षेत्र में भूमिका है।

सदियों के ठंडी बुझी राख सुगबुगा उठी,
मिट्टी सोना का ताज पहन इठलाती है।
दो राह समय के रथ का घर्घरनाद सुनो,
सिहांसन खाली करो कि जनता आती है।

तो दूसरी और स्वतंत्र भारत जहां भुखमरी का तांडव नृत्य देखिए

श्वानों को मिलता दूध, वस्त्र भूखे बालक बुलाते हैं।
मां की हड्डी से चिपक ठिठुर, जाड़े की रात बिताते हैं।

वर्तमान भारत और हिंदी साहित्य

आज हमारे भारत में ऐसी विसंगतियां पनप रही है– सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद, भाषावाद, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, पूंजीवाद, सामंतवाद भारत की एकता और अखंडता को कमजोर बना रहे हैं। जिसका विरोध बगावत करके भारत की गरिमा को बरकरार रखने की कोशिश करनी चाहिए। आज का साहित्यकार आजादी लोकतंत्र संविधान और कानून के खोखले पन का उद्घाटन करता हुआ कहता है कि, अपने यहां श्संसद तेली की वह घानी है, जिसमें आधा तेल है और आधा पानी हैश इस प्रकार स्पष्ट है कि आधुनिक हिंदी काव्य में सामाजिक को बेनकाब करना अव्यवस्था के दमन और तानाशाही का चित्रण करते हुए व्यक्ति को संघर्षशील और क्रांतिकारी चेतना का भाव लोगों में जागृत करना चाहते हैं।

अब व्यक्ति को सारे खतरे उठाने ही होंगे। तोड़ने होंगे ही मठ और गढ़ सब अंता देशभक्तों में राष्ट्रीय गौरव का भाग जगाने देश के नौजवानों के सामने देश और धर्म के प्राण देने का आदर्श प्रस्तुत करना अतीत को वर्तमान से जोड़ना वर्तमान को सामाजिक आवश्यकता के अनुसार बदलने की प्रेरणा भी दी है। हिंदी के प्रमुख कवियों ने भारत की सांस्कृतिक गौरव परंपरा को अक्षुण्ण रखने पर बल दिया है तथा भारतवर्ष को भारत माता के रूप में चित्रण किया है। आज के संदर्भ में कवियों की अवधारणा प्रासंगिक लगती है। मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में आज की समग्र यथार्थ को प्रकट किया जा सकता है–

हम कौन थे? क्या हो गए? और क्या होंगे?
अभी आओ विचार करें, आज मिलकर यह समस्याएं सभी।

निष्कर्ष

यह कहा जाता है कि आधुनिक साहित्यकार की कविताएं वर्तमान को अतीत से जोड़ती है एवं भारत के आम नागरिकों में उसका और आस्था की भावना को जन्म देती हैं। – संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बांधने का पुनीत कार्य के साथ–साथ भारत के भावी युवाओं में देशभक्ति राष्ट्रप्रेम के भावों का संचार करते हुए भारत की गौरवमई परंपरा का पाठ साहित्य का अनुसरण करने में संभव है। हिंदी का साहित्य भारत की एकता और अखंडता को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य करता हैं।

संदर्भ सूची–

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, साबुन ओपेरा एवं महिलाओं की बात और प्रतिरोध की खुशी 1994।
2. डॉ रामनिवास गुप्त, हिंदी साहित्य का इतिहास 1994।

3. द बच्चन, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास 1985।
4. डॉ. जगदीश गुप्त, आधुनिक हिंदी साहित्य युग और प्रवृतियां 1994।
5. डॉ. नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास 1985।
6. डॉ. चातक, आधुनिक कविता का इतिहास 1992।